

- होने की एक मानसिक प्रवृत्ति विलो. परनिष्ठ रति।
- स्वरनलिका स्त्री.** (तत्.) सूत्र के आकार का गले और छाती के अंदर का वह अंग जिसकी सहायता से आवाज निकलती है।
- स्वरनादी पुं.** (तत्.) संगी. मुँह से फूँक कर बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा।
- स्वरनाभि पुं.** (तत्.) प्राचीन काल का एक प्रकार का प्रसिद्ध वाद्ययंत्र।
- स्वरपत्तन पुं.** (तत्.) सामवेद।
- स्वरपाल पुं.** (तत्.) 1. किसी शब्द के उच्चारण में उसके किसी एक वर्ण में ठहरना या कुछ रुकना 2. उचित वेग या रुकाव को ध्यान में रखकर किया गया शब्द का उच्चारण accent
- स्वरप्रधान वि.** (तत्.) ऐसा राग जिसमें विशेष रूप से स्वर की ही प्रधानता हो, ताल की प्रधानता न हो।
- स्वरबद्ध वि.** (तत्.) जो राग स्वरों में बँधा हुआ हो।
- स्वरब्रह्म पुं.** (तत्.) स्वर में होने वाली ब्रह्म की अभिव्यक्ति, अनुभूति।
- स्वरभंग पुं.** (तत्.) 1. स्वर के उच्चारण में होने वाली बाधा 2. गला बैठने या गले से ठीक तरह आवाज न निकलने का एक रोग 3. साहित्य का एक सात्विक अनुभाव जो हर्ष, भय, करुण की अनुभूति में गला भर आना या गले से आवाज का अस्पष्ट निकलना या अन्य कुछ निकलने वाला।
- स्वरभंगी पुं.** (तत्.) 1. जिसे स्वरभंग होने का रोग हो 2. जिसे गले का रोग होने से आवाज स्पष्ट नहीं निकलती हो 3. एक पक्षी।
- स्वरभाव पुं.** (तत्.) संगीत में अंगसंचालन किए बिना केवल स्वर से ही हर्ष, शोक आदि भाव प्रकट करने की क्रिया।
- स्वरभूषणी स्त्री.** (तत्.) संगी. कर्नाटक पद्धतीय संगीत की एक रागिनी।

- स्वरभेद पुं.** (तत्.) 1. उच्चारणगत अस्पष्टता या रुकावट 2. गला बैठने का एक रोग।
- स्वरमंडल पुं.** (तत्.) पूर्वकाल में प्रचलित वीणा की तरह का एक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र जो अब प्रचलन में नहीं है।
- स्वरमंडलिका स्त्री.** (तत्.) दे. स्वर-मंडल।
- स्वरमात्रा स्त्री.** (तत्.) उच्चारण की मात्रा।
- स्वरयंत्र पुं.** (तत्.) गले के अंदर स्थित वह भाग या अंग जिसकी सहायता या प्रयत्न से स्वर या शब्द निकलते हैं।
- स्वररंजनी स्त्री.** (तत्.) संगीत विधा में कर्नाटकी पद्धति की एक विशेष रागिनी।
- स्वरलहरी स्त्री.** (तत्.) 1. संगीत में गायन के विविध रूपों के लिए उत्पन्न की जाने वाली ऊँची-नीची स्वरों की लहर या क्रम 2. संगीत में वह झंकार या आलाप जो क्षण मात्र के लिए एक ही रूप में होता है।
- स्वरलासिका स्त्री.** (तत्.) बाँस से बना वाद्य यंत्र, बाँसुरी, मुरली।
- स्वरलिपि स्त्री.** (तत्.) संगीत में किसी गीत, राग, लय, तान आदि के लिए आवश्यक सभी स्वरों का क्रमबद्ध किया हुआ लेख notation
- स्वरवान वि.** (तत्.) 1. स्वर वाला, शब्द-युक्त 2. स्वरवर्ण या मात्रा से युक्त।
- स्वरवाही पुं.** (तत्.) वह वाद्ययंत्र या वाद्ययंत्रों का समूह जो स्वर उत्पन्न करता हो किंतु ताल देने वाले वाद्यों को छोड़कर वि. वह बाजा जो केवल स्वर निकाल सके, ताल आदि नहीं।
- स्वरविज्ञान पुं.** (तत्.) स्वरों का सम्यक् रूप से विवेचन करने वाला शास्त्र, स्वर तत्त्व, स्वरशास्त्र।
- स्वरवेधी वि.** (तत्.) शब्द-वेधी।
- स्वरशास्त्र पुं.** (तत्.) वह शास्त्र जिसमें स्वरों से संबंधित सभी तथ्यों का सांगोपांग विवेचन किया गया हो, स्वरविज्ञान।